prabhatkhabar.com

प्रभात खबर

लाइफ @ संडे

जर्नलिज्म जिंदगी का

पटना, रविवार 5.04.2020 08

पेज 09 पति-पत्नी मिलकर बना रहे हैं टिक-टॉक...

पटना पॉल्यूशन मीटर

बीते दिन कैसी रही हवा

एयर क्वालिटी इंडेक्स 74 (सामान्य खराब) पीएम 2.5 24

गुडमॉर्निंग

मृत्यु पर तो अमृत की ही विजय हो सकती है.

■ भगवान बुद्ध

जू में कर्मचारियों को दिये गये मास्क

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

कोरोना वायरस से बचाव को देखते हुए पटना जू में इन दिनों सतर्कता एवं बचाव के साथ काम चल रहा है. बता दें पटना जू लॉक डाउन के पहले से भी बंद है.यहां दर्शकों का आना पूरी तरह से निषेध है. ऐसे में जू के अंदर प्रतिदिन कर्मचारी काम कर रहे हैं, लेकिन इन दिनों यहां स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है. इस बात की जानकारी देते हुए पटना जू के डायरेक्टर अमित कुमार ने बताया कि कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए जू के अंदर सभी कर्मचारी मास्क का इस्तेमाल कर काम कर रहे हैं.

शनिवार को जू में सभी कर्मचारियों एवं जवानों के बीच मास्क एवं डिटॉल साबुन वितरण किया गया, ताकि वह स्वच्छ रहकर काम कर सकें. जू परिसर में काम कर रहे कर्मचारियों का प्रतिदिन प्रवेश के समय उनका स्वास्थ्य जांच किया जाता है. इस दौरान गेट परिसर के अंदर आ रहे कर्मचारियों का तापमान सबसे पहले देखा जाता है. यहां लोगों की जागरूकता के लिए नोटिस बोर्ड भी लगा हुआ है, जिसमें लिखा हुआ है कि आने समय सबसे पहले डिटेल से अपना हाथ धोएं. मास्क पहने और आपस में दूरी बनाकर काम करें. लॉक डाउन के दौरान सभी कर्मचारी अपनी ड्यूटी बेहतर तरीके से निभा रहे हैं और जानवरों का भी खास ख्याल रख रहे हैं.

दोहरी चुनौती. जिंदगी की जद्दोजहद में लगे हैं पुलिसवाले, घर लौटने पर बरतते हैं पूरा एहतियात

सड़क पर सताती रहती है घरवालों की चिंता

विजय सिंह @ पटना

लॉक डाउन के पहरेदार सड़कों पर मुस्तैद हैं, पूरे दिन लॉक डाउन का पालन करवा रहे हैं. कोरोना से बचाव के किट, हाथ में दस्ताने पहन कर खुद को तो सुरक्षित रख रहे हैं लेकिन उन्हें परिवार की चिंता सता रही है. मन में भय बना हुआ है कि कहीं उनके माध्यम से उनके परिवार में कोरोना वायरस न पहुंच जाये. यही दहशत उनके परिवार वालों के भी मन में हैं. इसी सोच में डूबे रहते हैं कि ड्यूटी के दौरान संक्रमण न हो जाये. परिवार के लोग खैर मनाते हैं और भगवान से विनती करते हैं .संक्रमण के खतरे से बचने के लिए ड्यूटी से घर लौटने पर पूरा एहतियात बरतते हैं. घर पहुंचते ही साबुन से हाथ धोते हैं. घर के बाहर ही वर्दी खोल देते हैं. और गर्म पानी में से डाल देते हैं. कुछ पुलिसकर्मी रात में ड्यूटी से जाने पर स्नान भी करते हैं. उसके बाद परिवार के साथ भोजन करते हैं. परिवार के लोगों का कहना है कि उनकी दिनचर्या बदल सी गई हैं. प्रभात खबर संवाददाता ने पुलिस वालों के परिवार से इस संबंध में बातचीत किया है और उनकी प्रतिक्रिया जाना है. आइए आपको भी पुलिस वालों की फैमिली से उनकी प्रतिक्रिया से अवगत कराते हैं.

हाथ में दस्ताने, मुंह पर मास्क पहन कर खुद को सुरक्षित रख रहे हैं

लोगों की चेकिंग करते हुए पुलिसवालों को परिवार की चिंता सताती रहती है.

छूने से पहले हाथ को डेटॉल से धोता हूं

राजीव नगर के थानेदार निशांत सिंह का परिवार राजीव नगर में ही रहता है. निशान सिंह ने बताया कि हम लोग तो बहुत एहतियात में रहते हैं .दस्ताना पहन के काम करते हैं लेकिन जब घर जाते हैं तो परिवार के लोग डरे रहते हैं. घर का दरवाजा छूने से पहले हाथ को डेटॉल से धोते हैं. वर्दी को धुलवाते हैं और रोज वर्दी बदलते हैं. लॉक डाउन की पहरेदारी जोर शोर से किया जा रहा है लेकिन हम लोगों के परिवार की सुरक्षा एक तरह से भगवान भरोसे ही है. लेकिन परिवार की चिंता किए बिना हम लोग ड्यूटी पर जमे हुए हैं.

प्रतिदिन हम लोग संक्रमण से एहतियात बरत रहे हैं

पीएमसीएच परिसर में मौजूद टीओपी प्रभारी एसआई **अमित कुमार** का परिवार जक्कनपुर में बीके दत्ता लेन में रहता है. उनकी पत्नी निम्मी का कहना है कि ड्यूटी से आने पर उनके पति घर के बाहर ही वर्दी चेंज करते हैं. साबुन से हाथ पैर धुलते हैं. उसके बाद घर के अंदर प्रवेश करते हैं. वर्दी को गर्म पानी में धोया जाता है और वर्दी रोज बदलते हैं. दो छोटे बच्चे हैं लेकिन कोरोना से पहले वह जिस तरह से अपने पापा के साथ खेलते थे अभी वह नहीं खेलते और उनसे दूर ही रखा जाता है .बच्चों ने उनका नाम कोरोना पापा रख दिया है .इस तरह से प्रतिदिन हम लोग संक्रमण से एहतियात बरत रहे हैं. लेकिन मन में डर बना हुआ है.

फ्रेश कपड़ा पहनकर करते हैं भोजन

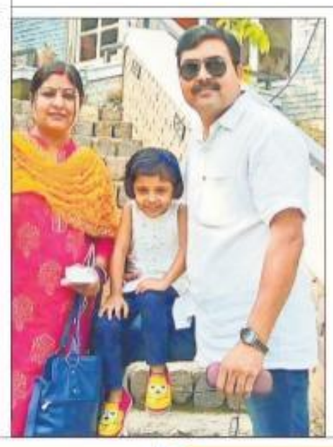

जक्कनपुर के थानेदार मुकेश वर्मा का परिवार गोला रोड में रहता है. उनकी पत्नी का कहना है कि रात में ड्यूटी से जब घर आते हैं तो पूरा कपड़ा बदल कर सीधे बाथरूम में जाते हैं और स्नान करते हैं .उनकी वर्दी धूल आती है और फिर फ्रेश कपड़ा पहन के परिवार के साथ भोजन करते हैं. भले ही हम लोग को रोना के संक्रमण से बचने के लिए पूरी सावधानी बरत रहे हैं लेकिन मन में एक डर सा बना हुआ रहता है.

सोशल डिस्टेंस की थ्योरी पर काम

सीआरपीएफ के हेड क्वार्टर में तैनात सूबेदार मेजर नीरज सिंह का कहना है कि ऑफिस में सोशल डिस्टेंस की थ्योरी पर काम किया जाता है. कुछ भी खाने से पहले साबुन से हाथ धोते हैं हम लोग और सैनिटाइजर का भी इस्तेमाल करते हैं. घर में डेटॉल भी है .परिवार के लोगों को भी संक्रमण से बचने के लिए कई बार साबुन से हाथ धोने के लिए कहा जाता है और ड्यूटी से घर जाने साबुन से हाथ पैर धोकर कपड़े को धोया जाता है .

दोमन पासवान.

एक घंटे तक रखते हैं दूरी

इसी तरह से पीएमसीएच में तैनात एसआई दोमन पासवान, होमगार्ड रतन कुमार सिंह भी कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए साफ सफाई रखते और घर जाने पर करीब 1 घंटे तक परिवार से दूरी बनाकर रखते हैं. नहाने धोने के बाद परिवार के साथ भोजन करते हैं.

रतन सिंह

संक्रमण से करते हैं बचाव

शास्त्री नगर थाने में तैनात एसआइ योगेंद्र सिंह का कहना है कि दिन में पूरी मुस्तैदी के साथ ड्यूटी करते हैं. लोगों से पूछताछ करके ही उन्हें आगे जाने दिया जाता है और अपने इलाके में सोशल डिस्टेंसिंग का पूरा पालन करवा रहे हैं. जब घर जाते हैं संक्रमण से बचाव के सभी उपाय करते हैं. हाथ को साबुन से धोना ,डेटॉल से धोना ,वर्दी धूलवाना सभी काम होता है.

संत जेवियर में इ-केयर एप से पढ़ रहे बच्चे

संत जेवियर हाइ स्कूल.

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

कोविड-19 वायरस को पूरे शहर मे लॉकडाउन है. स्कूली बच्चों की पढ़ाई पर इस लॉकडाउन का असर न पड़े, इसको लेकर शहर के विभिन्न स्कूलों वेबसाइट और एप की मदद से बच्चों को पढ़ा रहे हैं. गांधी मैदान स्थित संत जेवियर हाइ स्कूल की ओर से बताया गया कि प्राइमरी सेक्शन के बच्चों को स्कूल के इ-केयर एप के माध्यम से विभिन्न सब्जेक्ट के प्रत्येक चैप्टर की पढ़ाई करायी जा रही है. इसमें बच्चों को प्रत्येक चैप्टर पढ़ाने के बाद उसके नोट्स भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं. बच्चों के साथ इस एप से उनके अभिभावक भी जुड़े हुए हैं, जिससे उन्हें भी सिलेबस की जानकारी मिल रही है. इस एप पर बच्चों को वीडियो और रिलेटेड चैप्टर के यू-ट्यूब लिंक भी सेंड किये जा रहे हैं.

हाइ स्कूल के बच्चों के लिए बनाया गया है वाट्सएप ग्रुप : वहीं, स्कूल के सीनियर वर्ग के बच्चों के लिए क्लास टीचर द्वारा अलग-अलग वाट्सएप ग्रुप बनाया गया है. इस पर उन्हें स्टडी मेटेरियल और प्रत्येक चैप्टर पर शिक्षकों द्वारा वीडियो बना कर सेंड किया जा रहा है. इसके अलावा बच्चों को स्कूल के सिलेबस, एक्टिविटी और प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी जा रही है. हाइ स्कूल के बच्चे यहां पर डाउट होने पर अपने शिक्षक से सीधा सवाल पूछ सकते हैं और नोट्स भी पा सकते हैं.

"बहुत सारे बच्चे लॉकडाउन की वजह से नये सत्र की किताब भी नहीं खरीद पाये थे इसलिए हमने स्कूल के इ-केयर एप का सहारा लिया है. यहां पर प्रत्येक चैप्टर को स्कैन कर बच्चों तक उसके नोट्स पहुंचाये जा रहे हैं. डाउट होने पर शिक्षक से सीधा सवाल पूछ सकते हैं. हाइस्कूल के बच्चों के लिए अलग से वाट्सग्रुप बनाया गया है जहां पर उनके क्लास टीचर बच्चों वीडियो और पीडीएफ फाइल के माध्यम से पढ़ा रहे हैं. बच्चों को सिलेबस की जानकारी के अलावा प्रत्येक चैप्टर के नोट्स भी मुहैया कराये जा रहे हैं.

फादर क्रिस्टू सावरीराजन, प्रिंसिपल, संत जेवियर हाइ स्कूल.

लॉकडाउन रामायण, महाभारत व चाणक्य ने फिर से बदली सीरियल की परिभाषा

घरेलू कलह, साजिश की जगह खूब पसंद आ रहे संस्कारी बनाने वाले सीरियल्स

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

पिछले एक सप्ताह से टीवी पर न तो रिश्तों की उठापटक और पति, पत्नी व प्रेमिका के बीच षड्यंत्रों वाले सीरियल दिख रहे हैं और न ही सास बहू के झगड़े और एक दूसरे के विरुद्ध की जानेवाली साजिश पर आधारित सीरियल. इनकी जगह रामायण व महाभारत जैसे क्लासिकल सीरियल दिखाई दे रहे हैं. लॉकडाउन के कारण चौबीस घंटे घर में ही रहने को विवश दर्शकों को ये न केवल बहुत पसंद आ रहे हैं बल्कि बेमतलब की रस्साकशी और साजिश पर आधारित कहानियों को लगातार देखने से ऊब चुके लोगों को ये स्वच्छ हवा के झोंके की तरह भी लग रहे हैं जो उनके मिजाज को बदल रहे हैं. कई दर्शक तो इनमें इतने लीन हो जा रहे हैं कि पूरे एपिसोड के दौरान वे अध्यात्मिक घटनाक्रमों और आदर्शों में डुबकियां लगाते रहते हैं. कई बुजुर्गों को तो ये इतने पसंद आ रहे हैं कि वे इन्हें नयी पीढ़ी के संस्कार सुधारने के लिए भी उपयोगी बताते हैं. पटेल नगर की निर्मला देवी ने कहा कि बुजुर्गों को नयी पीढ़ी के बच्चों को भी अपने साथ बिठा कर इसे दिखाना चाहिए. विदित हो कि 25 मार्च को कोरोना से बचाव के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की शुरुआत के साथ ही हर दिन दिखाये जा रहे टीवी सीरियलों के नये एपीसोड की शूटिंग पर भी ब्रेक लग गया. अगले तीन-चार दिनों के भीतर ही अलग अलग इंटरटेनमेंट चैनलों पर हर रोज दिखाये जा रहे कुंडली भाग्य, कुमकुम भाग्य, ये रिश्ता क्या कहलाता है जैसे कई टीवी सीरियल बंद हो गये. दूसरी ओर 28 मार्च से दूरदर्शन ने रामायण, महाभारत जैसे सीरियलों का फिर से प्रसारण शुरू किया.

अनीसाबाद में टीवी पर रामायण देखते एक परिवार के सदस्यगण.

महाभारत – बीआर चोपड़ा द्वारा निर्मित 94 एपीसोड वाला यह मेगा सीरियल 1988 से 1990 के दौरान दिखाया गया. बीते 28 मार्च से डीडी भारती पर दोपहर 12 से 1 बजे तक और शाम में सात से आठ बजे तक इसका फिर से प्रसारण हो रहा है.

रामायण – रामानंद सागर के द्वारा निर्मित 78 एपिसोड वाला यह मेगा सीरियल 25 जनवरी 1987 से 31 जुलाई 1988 तक दिखाया गया. बीते 28 मार्च से डी डी नेशनल पर सुबह नौ से 10 बजे और रात में नौ से 10 बजे तक फिर से प्रसारित किया जा रहा है.

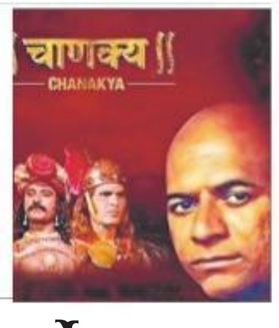

फ्लैशबैक की तरह लौट आती हैं पुरानी स्मृतियां

रामायण और महाभारत जैसे सीरियलों को फिर से देखने से अधिकतर लोग अपने 32-33 साल पुराने दिनों में लौट आते हैं. एजी कॉलोनी की मीना मिश्रा ने बताया कि जब रामानंद सागर का रामायण सीरियल पहली बार दिखाया गया था, वे स्कूल में पढ़ती थी. उनके यहां उस समय टीवी नहीं था और वे पड़ोसी के यहां इस सीरियल को देखने जाती थी. ऐसा नहीं कि केवल वही ऐसा करती थी बल्कि आसपास के तीन-चार घरों के बच्चे और बड़े भी जिनके यहां टीवी नहीं था, सब वहीं आ जाते थे और उनके टीवी वाले रूम से लेकर बाहर बरामदे तक 20-25 लोग भर जाते थे. उनमें से कई लोग ऐसे भी हैं जिन्हें बरसों से नहीं देखा और कुछ लोग तो अब इस दुनिया में भी नहीं रहे. इस सीरियल के प्रसारण से बरसों बाद एकबारगी सब याद आ गये.

शूटिंग तकनीक व फार्मेट पुराना पर प्रभाव में डिजिटल पर भी भारी

रामायण और महाभारत की तुलना आज के सीरियलों से करें तो यह तकनीकी दृष्टि से पीछे है. सीडीए कॉलोनी के निशांत श्रीवास्तव बताते हैं कि इन दोनों सीरियलों का शूटिंग फार्मेट पुराना है. शूटिंग में स्टैंडिंग कैमरों का इस्तेमाल हुआ है जबकि इन दिनों ट्रॉली, क्रेन और ड्रोन कैमरों का धड़ल्ले से इस्तेमाल होता है. लाइट भी केवल तीन प्रकार के इस्तेमाल किये गये हैं. एडिटिंग भी परंपरागत है, जिसकी वर्तमान डिजिटल तकनीक से की जाने वाली एडिटिंग से कहीं से भी तुलना नहीं की जा सकती है. लेकिन तकनीकी पिछड़ेपन के बावजूद प्रभाव की दृष्टि से ये सब पर भारी हैं. यही कारण है कि निर्माण के 32-33 वर्ष बाद भी ये सीरियल इतने पसंद किये जा रहे हैं.

प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल कर बनाया लकड़ी का विकल्प

आनंद तिवारी @ पटना

पटना शहर सहित पूरे जिले से निकलने वाले प्लास्टिक कचरे को रीसाइकिल कर लकड़ी व प्लास्टिक तैयार किया जा रहा है. नगर निगम के साथ हुए करार के तहत यूएनडीपी व एचसीसीबी कंपनी ने कचरा प्रबंधन के लिए गर्दनीबाग सरकारी अस्पताल से सटे निगम की जमीन पर एक यूनिट स्थापित की है. यहां कूड़े से कम्पोस्ट खाद तैयार की जा रही है, जिसे कम्प्रेस्ट मशीन से रीसाइकिलिंग कर प्लास्टिक तैयार की जा रही है. नगर-निगम से मिल कर दोनों कंपनियों ने चार साल का करार किया है.

प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट नाम से स्थापित यह प्लांट पूरे बिहार का पहला प्लांट है, जहां कचरे से कुल सात तरह के प्लास्टिक की सामग्रियां तैयारी की जा रही है. प्लास्टिक के इस पदार्थ से बेंच, टेबल, बोतल, डस्टबिन, खिड़कियों के जाल आदि तैयार किये जा रहे हैं. इसके साथ ही इसे सड़क बनाने वाली कपंनियों को भी दिया जा रहा है.

वहीं, नगर-निगम के अधिकारियों के मानें तो प्लास्टिक कचरे की बढ़ती समस्या से निपटने के लिए कई भारतीय शहरों ने पर्यावरण के अनुकूल तरीकों का सहारा लिया है. चेन्नई, पुणे, जमशेदपुर और इंदौर लखनऊ आदि शहरों में प्लास्टिक की सड़कों को बनाने के लिए प्लास्टिक कचरे का इस्तेमाल किया जा रहा है. फिलहाल कंपनी की ओर से पटना में प्लास्टिक का निर्माण कर इंदौर, बनारस आदि जगहों पर भेजी जा रही है, जिससे संबंधित सातों सामग्रियां बनायी जा रही है.

गर्दनीबाग में प्लास्टिक कचरे से बना रहे बेंच, टेबल व डस्टबिन

पांच हजार वर्ग फुट जमीन में बना प्लांट : नगर-निगम ने कंपनी को फिलहाल अपनी 5239 वर्ग फुट जमीन दी है. प्लांट की रोजाना पांच मीट्रिक टन की क्षमता है, जिसका चार साल तक करार हुआ है. अधिकारियों की मानें तो अभी 10 हजार स्क्वॉयर फुट जमीन की मांग की जा रही है. अगर जमीन मिलती है तो जो प्लास्टिक निर्माण कर इंदौर, बनारस आदि जगहों पर भेजी जा रही उस प्लास्टिक का पटना में ही टेबल, डस्टबिन, खिड़कियों के जाल आदि बनाने का काम शुरू होगा.

प्लास्टिक पर्यावरण के लिए खतरा

प्लांट में आने वाला अधिकतर कचरा प्लास्टिक की थैलियों के रूप में आता है. इसके अलावा प्लास्टिक के जार व पैकेजिंग में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक को भी कंपनी रीसाइकिल करती है. विशेषज्ञ कहते हैं कि प्लास्टिक इको-सिस्टम के लिए खतरा है.

कहते हैं अधिकारी

नगर-निगम, यूएनडीपी व एचसीसीबी तीनों मिल कर गर्दनीबाग में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की स्थाना की है. फरवरी से प्लांट शुरू हो गया है. निगम की ओर से आ रहे कचरे से ठोस प्लास्टिक का निर्माण किया जा रहा है. उनके बनाये गये प्रोडक्ट से आप पिकनिक टेबल से लेकर पार्क की बेंच, डस्टबिन आदि कुल सात तरह के सामान बना सकते हैं. बिहार का यह पहला प्लांट है. कोशिश है कि इस मॉडल कर अन्य क्षेत्रों में भी लागू किया जाये.

अरविंद कुमार, प्रोग्राम ऑफिसर, प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूएनडीपी, पटना.

सिटीअपडेट

हॉकर्स बंधुओं के बीच राहत सामग्री का वितरण

दानापुर. कोरोना वायरस संक्रमण व लॉकडाउन को देखते हुए युवा समाजसेवी रंजीत कुमार ने हॉकर्स बंधुओं के बीच राहत सामग्री का वितरण किया. शनिवार को अहले सुबह श्री कुमार अपने सहयोगी के साथ अस्पताल मोड़ अखबार वितरण सेंटर पहुंच हॉकर्स बंधुओं के बीच मास्क, बिस्कुट, पानी की बोतल व नाश्ते का पैकेट दिया. इससे पहले सभी हॉकर्स बंधुओं का हाथ सैनेटाइजर करवाया. दानापुर पत्र-पत्रिका हॉकर्स यूनियन संघ के अध्यक्ष पृथ्वी राज ने बताया कि समाजसेवी रंजीत ने मानवता की सेवा की है. मौके पर हॉकर्स बंधुओं में राजेश कुमार, प्रदीप कुमार, राजू कुमार, कृष्ण, अविनाश, नीलंबर चौधरी, त्रिलोकी, विश्वजीत कुमार समेत सैकड़ों हॉकर्स बंधु मौजूद थे.

गरीबों को राशन पहुंचा रही आइआइटी मेडिकल छात्रों की कोरोना वॉरियर्स टीम

पटना. 21 दिन के लॉक डाउन में कई गरीब परिवार ऐसे हैं, जिन्हें एक वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिल रहीं है. इस कठिन परिस्थिति में पटना के इंजीनियरिंग-मेडिकल के छात्रों ने कोरोना वॉरियर्स नाम से एक मुहिम शुरू की है. इसके माध्यम से ये लोग झुग्गियों और बस्तियों में रहने वाले गरीब दिहाड़ी मजदूरों को राशन और जरूरत का सामान उपलब्ध करा रहे हैं. इस बीच इन्होंने वार्ड संख्या 29 की महिला वार्ड पार्षद अर्चना राय और उनके सहयोगी विशाल, करबिगहिया दुकानदार संघ के अध्यक्ष विनय गुप्ता की मदद से 70 से अधिक परिवारों को एक हफ्ते का मुफ्त राशन जक्कनपुर थाना की निगरानी में वितरित किया है. यह कार्य वार्ड 29 के विभिन्न इलाके में करवाया गया. कोरोना वॉरियर्स को अमन गुप्ता (आइआइटी कानपुर), रौशन कुमार (आइजीआइएमएस, पटना), प्रतीक मेहता (केमिकल इंजीनियर) और अंकित गुप्ता (एनआइटी भोपाल) ने लॉक डाउन को लेकर शुरू किया है. इन्होंने अबतक 100 से ज्यादा परिवारों को एक हफ्ते का राशन पहुंचाया है. इनकी टीम में अदिति, शुभांग, शुभांशू, राहुल, ज्योति और देशभर के कई अलग- अलग कॉलेज के छात्र शामिल हैं. ये सभी क्राउड फंडिंग से पैसे इकठ्ठा करके इस काम को पूरा करते हैं. ये आगे पटना के अलग अलग इलाको में बसे गरीबो को मदद पहुंचाना चाहते है.

राज्य के कलाकारों ने सीएम को भेजा पत्र

पटना. लॉक डाउन से बिहार के बहुत से कलाकारों के सामने भूखमरी की स्थिति उत्पन्न हो गयी है. इसे लेकर उन्होंने मंत्री को पत्र भेजा है. बिहार कला मंच ने कलाकारों को इस स्थिति से उबारने के लिए मुख्यमंत्री, कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री और उद्योग मंत्री को ई मेल पत्र भेजा है. मंच के सचिव बिरेंद्र कुमार सिंह तथा कोषाध्यक्ष मनोज कुमार बच्चन ने संयुक्त बयान जारी करते हुए कहा कि लॉक डाउन की यह स्थिति कलाकारों के लिए बहुत ही चिंताजनक है. सरकार से मांग करते हुए मनोज कुमार बच्चन ने कहा की कलाकार हर वक़्त अपनी कला के माध्यम से सरकार और समाज को सही दिशा देने मे सहयोग करता रहा है मगर आज वही कलाकार अपनी दिशा तय करने में विचलित हो रहा है ऐसे में कलाकारों की मदद करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए. सचिव बिरेन्द्र कुमार सिंह ने कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री से अनुरोध किया है कि लॉक डाउन की स्थिति में जो कार्यक्रम आयोजित नहीं होंगे उसकी राशि को कलाकारों के सहायतार्थ बने कलाकार कल्याण कोष मे देकर उससे कलाकारों को सहयोग किया जाए इसके लिए आवश्यक कदम जल्द से जल्द उठाया जाना चाहिए.

कोरोना को हराना है

कोरोना को हराना है
रेल को चलाना है
रेलों से पहुंचेगी आवश्यक सामग्री
सब दूर
जनता को मिलनेगी कोरोना से लड़ने
की ताकत भरपूर
लक्ष्मण रेखा को नहीं फांदेंगे
खुद को और दूसरों को इस रोग से
बचायेंगे
मोदी की सलाह का करेंगे पूरा पालन
जिससे भारत का संसार में रहेगा
रूतबा कायम
आरोग्य सेतु एप को करेंगे डाउनलोड
जिसमें समाहित है कोरोना को हराने
का भेद
आयुष मंत्रालय ने दिया है कोरोना को
हराने का नुस्खा
इसका इस्तेमाल करने से होगा सबको
भरपूर फायदा
गृह मंत्रालय भी कर रहा है जारी
दिशा-निर्देश
बारीकी से जांच हो रही जो गये थे हाल
में विदेश
मोदी के नेतृत्व में भारतवंशियों को है
पूरा विश्वास
की देश से होगा कोरोना वायरस का
पूर्ण विनाश.

ललित चंद्र त्रिवेदी
महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल.

लॉकडाउन. घर में मनोरंजन के लिए कर रहे प्रयोग

पति-पत्नी मिलकर बना रहे हैं टिक-टॉक वीडियो

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

लॉकडाउन के दौरान लोग अपने घर में कई तरह की एक्टिविटीज करते हुए समय बिता रहे हैं. ऐसे ने न सिर्फ घर के बच्चे तरह तरह के गेम खेल रहे हैं बल्कि कई घर ऐसे भी हैं, जहां पति-पत्नी मिल कर भी कुछ क्रिएटिव करने में देरी नहीं कर रहे. सबसे ज्यादा टिक टॉक वीडियो सामने आ रहे हैं. इन वीडियो की खास बात यह है कि इसमें पति पत्नी की भागीदारी साथ साथ हैं. फेसबुक इंस्टाग्राम व्हाट्सएप पर पति पत्नी के नए वीडियो को देख लोग लाइक और कॉमेंट्स करने में भी देरी नहीं कर रहे हैं.

कोरोना से संबंधित भी खूब बन रहे हैं वीडियो, दिख रहा है ह्यूमर

वैसे तो टिक टॉक का क्रेज काफी पुराना है इन दिनों कोरोना से संबंधित नये और क्रिएटिव अंदाज में वीडियो बन रहे हैं. इस दौरान गो कोरोना के वीडियो लोगों को पसंद आ रही है. इसके अलावा भी कोरोना पर जोक्स लॉक डाउन के दौरान घर में रहने की कला, साथ ही पति पत्नी में हो रहे हैं नोकझोंक पर तरह तरह की वीडियो बनायी जा रही है, जिसमें गृहिणी या भी भाग ले रही. इस बारे में कई कपल्स ने भी बताया कि लॉक डाउन में लंबा समय साथ रहने का मौका मिला है. ऐसे में कुछ अलग हो जाए तो हमेशा यादगार रहेगा. अभी टिक टॉक का जमाना है तो इसी में हाथ आजमाया जा रहा है.

पहली बार पति के साथ बनाया वीडियो

दोनों पति-पत्नी वर्किंग होने के कारण आपस में कम टाइम बिता पाते हैं. एसे में लॉक डाउन के दौरान हमें साथ में लंबा वक्त बिताने का बेहतर मौका मिला है. इसलिए कोरोना वायरस जैसे गंभीर बीमारी से बचते हुए हम अपने घर में अनोखे अंदाज में समय बिता रहे हैं. यह कहना है दानापुर की रहने वाली मनीषा सोनी का जो इन दिनों अपने पति राहुल कुमार के साथ टिक टॉक के 8 से 10 वीडियो बना चुके हैं. इस बारे में उन्होंने बताया कि हस्बैंड के साथ टिक टॉक बनाना अच्छा लग रहा है. इन वीडियो को हमेशा संजोकर रखेंगे. मेरी मंशा व्यूवर्स बटोरना नहीं बस अच्छा समय बिताना है.

टिक टॉक बनाने में आ रहा है मजा

मुझे टिक टॉक बनाना काफी पसंद है, लेकिन मेरे पति कभी साथ नहीं देते थे. अभी छुट्टी का टाइम है. लाक डाउन में कुछ और काम करने का मन नहीं कर रहा घर में ही समय बिताना है, तो हम लोग मिलकर नए-नए वीडियो बना रहे हैं इस बात की जानकारी इसी अंदाज में गर्दानीबाग की रहने वाली शिखा ने बताया कि 21 दिन घर में समय बिताना बड़ी बात लेकिन अगर हम कुछ क्रिएटिव करें तो घर में भी मजे से रह सकते हैं. इसके लिए मैं अपने पति सुजीत के साथ वीडियो बनाए, जिसे अपने फ्रेंड्स और फैमिली के बीच शेयर भी किया लोग काफी पसंद कर रहे हैं.

टिक-टॉक बनाने के लिए पति को मनाना पड़ा

महिलाएं तो वैसे भी घर में रहती हैं, लेकिन पति बहुत कम समय ही परिवार के साथ रह पाते हैं. मैं सोशल मीडिया पर टिक टॉक देखा करती थी, लेकिन इस बार मेरा भी टिक टॉक बनाने का मन किया. सबसे अच्छा यह लगा कि लॉक डाउन के दौरान हमने अपने पति के साथ भी कुछ वीडियोस बनाए. यह कहना है सिटी के रहने वाली पल्लवी नारायण का जो कहती है कि मैं अपने पति आदित्य कुमार के साथ टिक टॉक वीडियोज बनायी हूं.

खाली समय में फोन पर करीब आ रहे रिश्ते

- मौके का उठा रहे फायदा-पुराने दोस्तों और रिश्तेदारों को दे रहे समय

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप को रोकने के लिए पूरे देश में लॉकडाउन को लागू किया गया है. ऐसे में ज्यादातर लोग अपने परिवार के साथ घर में ही समय बिता रहे हैं. लेकिन इस लॉकडाउन ने कहीं न कहीं रिश्तों में मिठास घोलने का काम किया है. जहां पहले लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त होने के कारण दोस्तों और रिश्तेदारों को समय नहीं दे पाते थे. जिसको लेकर लोगों में मनमुटाव भी हो जाता था. लेकिन अब लॉकडाउन में लोगों के पास पर्याप्त समय है और लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तों से घंटों बात-चीत कर रहे हैं. कुछ लोग विडियो कॉल करके ही अपने बचपन की यादों को ताजा कर रहे हैं. लोग यह भी कह रहे हैं कि लॉकडाउन की वजह से लाइफ में कुछ तो मीठा हो ही रहा है.

बेटों के साथ शुरू किया है वीडियो कॉलिंग : खजांची रोड के रहने वाले डॉ शैलेंद्र कुमार ने कहा कि हमेशा अस्पताल में के कामों को ही तरजीह दिया है. अभी भी इस लॉकडाउन की स्थिति में मैं अपने बच्चों से दूर हूं, तो ऐसे मैं अपने बच्चों से वीडियों कॉलिंग कर हर रोज दिन में दो-तीन बार जुड़ जाता हूं और लंबी बातें करता हूं. पहले दो तीन दिन पर कभी बात हो जाती थी मगर अभी सभी से एक साथ बात हो जाती है. यह हमें काफी आनंद देता है. ऐसे वक्त में जब हम बाहर नहीं जा सकते हैं. वैसे में यह एक मौके की तरह है.

मैंने भतीजे से की बात

रूकनपुरा के रहने वाले जीतेंद्र सिंह ने बताया की भतीजे से बात कम हो पाती थी, इस छुट्टी में परिवार के करीब-करीब सभी सदस्य से अलग-अलग लंबी बात होती है. काफी अच्छा लगता है खुशी होती है सब के बारे में पूछ कर. एक बार बात शुरू होती है तो घंटे कब बीत जाते हैं पता ही नहीं चलता है.

बेटियों से देर तक बातें

पाटलिपुत्र कॉलोनी की साधना देवी ने कहा कि बेटी घर से दूर रहती है तो उसकी ज्यादा चिंता रहती है. पहले हर रोज बात नहीं करती थी मगर अब डेली बात करती हूं. घर पर सभी लोग हैं तो किसी एक भी फोन करती है तो सभी से बात हो जाती है. पुराने दौर की याद ताजा हो जाती है.

सभी को फोन किया

बोरिंग रोड की रहने वाली रेखा दत्त बड़ी मुश्किल से ही रिश्तेदारों को समय दे पाती थीं. लेकिन लॉकडाउन में घर पर ही रहना होता है तो, करीब-करीब सभी रिश्तेदारों को फोन कर उनसे हाल-चाल लेती रहती हूं. बहुत से रिश्तेदारों का फोन मेरे पास भी आता है.

राहत सामग्री के साथ दे रहे हैं मानसिक राहत

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आर्ट ऑफ लिविंग के स्वयंसेवकों द्वारा आइएएचवी के साथ मिलकर लाखों प्रवासी मजदूरों परिवारों और जरूरतमंदों को 500 टन से अधिक आवश्यक राहत सामग्री पहुंचायी गयी है. बिहार स्टेट कॉर्डिनेटर रमेश कुमार ने बताया कि आर्ट ऑफ लिविंग के बिहार चैप्टर द्वारा भी इस आपदा की घड़ी में कई प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं. जिलों में स्वयंसेवक लगातार काम कर रहे हैं. संस्थान ने बैंगलोर के अतिरिक्त हैदराबाद में भी एक अस्पताल की व्यवस्था की है. इसमें तनाव और चिंता को दूर करने संबंधी परामर्श के लिए एक ऑनलाइन हेल्पलाइन भी जारी की गयी है. स्वयंसेवकों ने देश के विभिन्न हिस्सों में फंसे एक लाख से अधिक दैनिक श्रमिकों और प्रवासी मजदूरों को राहत सामग्री पहुंचायी है. 500 टन राहत सामग्री का वितरण देश के विभिन्न हिस्सों में किया गया. संस्थान ने एक राष्ट्रीय हेल्पलाइन 080-676-12338 जारी की है, जहां आर्ट ऑफ लिविंग के शिक्षक लॉकडाउन में तनाव और चिंता से गुजर रहे लोगों को परामर्श देंगे.

लायंस क्लब कर रहा गरीबों की मदद

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

लायंस क्लब ऑफ पटना सेंट्रल द्वारा 29 मार्च से लगातार दो बार खिचड़ी वितरण का कार्यक्रम चल रहा है, यह कार्यक्रम 5 दिनों के लिए रखा गया था. ऐसे में शनिवार को अंतिम दिन भी कोरोना वायरस में लॉक डाउन के दौरान लाचार और जरूरतमंद लोगों के बीच खिचड़ी के साथ साथ बिस्किट पैकेट का वितरण जारी रहा.

इस दौरान अब तक 5480 खिचडी पैकेटस और सब बिस्किट के पैकेट बांटे गये. कार्य क्लब के सदस्यों के साथ किया जा रहा है. बता दें. जहां सोना बिस्कुट प्राइवेट लिमिटेड के सौजन्य से वितरित किया गया . बताया गया कि वितरण का कार्य लॉक डाउन के दौरान चलता रहेगा. क्लब के सदस्य जरूरतमंद लोगों के बीच व असहाय लोगों के बीच राहत सामग्री खाने पीने की चीजें बांटेंगे.

सामग्री वितरण के लिए जाते क्लब के सदस्यगण.

कल घर में ही मनायेंगे महावीर जयंती

पटना. जैन धर्म का महत्वपूर्ण त्योहार महावीर जयंती इस बार लॉक डाउन के कारण घरों में ही मनाया जायेगा. इस बार महावीर जयंती सोमवार को मनाया जायेगा. इस बात की जानकारी जैन संघ के प्रवक्ता एमपी जैन ने दी .उन्होंने बताया कि चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि पर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती मनायी जाती है.

जैन धर्म से जुड़े लोग बड़े ही धूम-धाम के साथ भगवान महावीर की जयंती मनाते हैं. इस पर्व के अवसर पर जैन मंदिरों में विधिवत पूजा-पाठ और मंदिरों को फूलों से सजाया जाता हैं. इस दिन में शोभा यात्राएं भी निकाली जाती थी.

पहल जेडी वीमेंस कॉलेज में पहली बार शुरू होगी जर्मन लैंग्वेज की पढ़ाई

महिला कॉलेजों में फॉरेन लैंग्वेज पढ़ने का मौका

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अप्रैल और मई के महीने में ज्यादातर कॉलेजों में एडमिशन का दौर चलता है. ऐसे में किस कॉलेज में क्या-क्या चीजें छात्राओं को सीखने को मिलेगी इसकी तलाश पहले की जाता है. पटना वीमेंस कॉलेज और मगध महिला कॉलेज में पहले से ही फौरेन लैंग्वेज की पढ़ाई होती थी अब इसमें जेडी वीमेंस कॉलेज का जुड़ चुका है.

जैपनिज लैंग्वेज की होगी शुरुआत : मगध महिला कॉलेज में पहले सिर्फ अन्य भाषाओं में पर्शियन, उर्दू और जर्मन की पढ़ाई होती थी लेकिन इस साल से जैपनिज लैंग्वेज एंड कल्चर की पढ़ाई शुरू हो जायेगी. यह छह महीने का सर्टिफिकेट कोर्स होगा. इसमें कुल 50 सीटें होंगी. इन सीटों के लिए कोई एडमिशन टेस्ट नहीं होगा बल्कि फर्स्ट कम फर्स्ट सर्व के तर्ज पर एडमिशन होगा. इस कोर्स की जिम्मेदारी फैकल्टी ऑफ ह्यूमैनिटीज को देने का प्रपोजल दिया गया है लेकिन जल्द ही प्राचार्या डॉ शशि शर्मा इसकी घोषणा करेंगी. कोर्स के लिए छह महीने का कोर्स प्लान भी तैयार किया जा चुका है. टीचर के तौर पर जापान की चिहियो सुजुकी और मनोज कुमार छात्राओं को इस लैंग्वेज को पढ़ाएंगे.

जेडी वीमेंस कॉलेज, पटना.

जर्मन लैंग्वेज पहली बार पढ़ेंगी छात्राएं

जेडी वीमेंस कॉलेज में पहली बार किसी फौरेन लैंग्वेज की पढ़ाई की शुरुआत होने वाली है. कॉलेज की प्राचार्या प्रो श्यामा राय ने जानकारी देते हुए बताया कि कॉलेज ने जर्मन लैंग्वेज सेंटर के साथ एमओयू साइन कर लिया है. सेमेस्टर वाइज इस लैंग्वेज की पढ़ाई होगी. यह एक सर्टिफिकेट कोर्स होगा जिसमें कुल 40 सीटें रखी गयी. इसकी क्लास सप्ताह में तीन दिन दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक होगी. इस भाषा को सीखने के लिए छात्राओं को आठ हजार की फीस देनी होगी. नये सत्र में छात्राएं इस लैंग्वेज को सीख सकेंगी.

कोरियन, जर्मन और फ्रेंच भी पढ़ें

पटना वीमेंस कॉलेज में छात्राओं का लैंग्वेज के प्रति रुझान देखने को मिलता है. कॉलेज में अभी फिलहाल कोरियन, जर्मन और फ्रेंच लैंग्वेज की पढ़ाई चल रही है. कोरियन लैंग्वेज एंड कल्चर की शुरुआत पिछले साल मार्च की महीने में हुई थी. इसमें कुल 30 सीटें और फीस 4000 रुपये हैं. वहीं जर्मन लैंग्वेज की शुरुआत जुलाई के महीने में हुई ,जिसमें कुल 30 सीटें हैं और फीस 4500 रुपये हैं. जबकि फ्रेंच लैंग्वेज अक्तूबर महीने से हुई है जिसमें कुल 50 सीटें और फीस 4500 रुपये हैं. इन तीनों लैंग्वेज की कुल अवधि छह महीने की है.